पसीना ग्रंथियां घाव की मरम्मत में मददगार हैं

शरीर पर कोई घाव हो जाए, तो आम तौर पर उसकी मरम्मत हो जाती है। ऐसा माना जाता रहा है कि चमड़ी के घावों को भरने के लिए नई कोशिकाओं का निर्माण बालों की आधार कोशिकाएं करती हैं। बालों की जड़ों के आसपास एक आवरण होता है जिसे फॉलिकल कहते हैं। अन्य जानवरों में घावों को भरने के लिए नई कोशिकाएं या तो बालों के फॉलिकल से बनती हैं या घाव के किनारे पर स्थित त्वचा की कोशिकाओं से। लिहाज़ा यह मानना गलत नहीं था कि इंसानों में भी ऐसा ही होता होगा।

मगर *अमेरिकन जरनल ऑफ पैथॉलॉजी* में प्रकाशित ताज़ा शोध पत्र के मुताबिक इंसानों में घावों को भरने के लिए नई कोशिकाएं एक किस्म की पसीना ग्रंथियों - एक्राइन ग्रंथियों - से बनती हैं। एक्राइन ग्रंथियां शरीर के तापमान के नियमन में मदद करती हैं। मिशिगन विश्वविद्यालय मेडिकल स्कूल की लौरे रिटी और उनके साथियों ने अपने उपरोक्त शोध पत्र में प्रयोगों के हवाले से यह जानकारी दी है।

घाव की मरम्मत के अध्ययन के लिए रिटी व उनके साथियों ने 31 वालंटियर्स की त्वचा पर लेज़र की मदद से छोटे-छोटे घाव बना दिए। इसके बाद एक सप्ताह तक उन्होंने इन व्यक्तियों के ऊतक के नमूनों की जांच की। यह देखा गया कि घाव बनने से पहले एक्राइन ग्रंथियों में बहुत थोड़ी-सी नई कोशिकाएं थीं। मगर चार दिन बाद इन ग्रंथियों में नई कोशिकाओं की भरमार देखी गई।

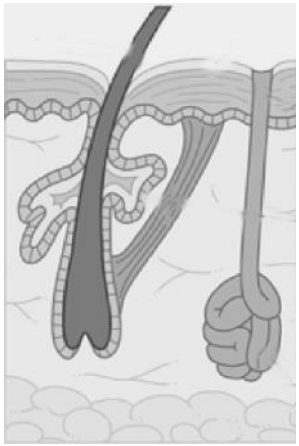

इससे पता चलता है कि एक्राइन ग्रंथियों में वयस्क स्टेम कोशिकाओं का भंडार होता है जिनका उपयोग घाव की मरम्मत के लिए नई कोशिकाएं बनाने में किया जाता है। गौरतलब है कि मनुष्यों में एक्राइन ग्रंथियों की संख्या हेयर फॉलिकल के मुकाबले तीन गुना ज़्यादा होती है। लिहाज़ा मनुष्यों में एक्राइन ग्रंथियां ही नई कोशिकाओं का प्रमुख स्रोत होती हैं।

अन्य वैज्ञानिकों का ख्याल है कि यह खोज निहायत अनपेक्षित है और परंपरागत सोच के विपरीत है। यह भी माना जा रहा है कि घाव की मरम्मत की दृष्टि से यह खोज कुछ सर्वथा नवीन उपचारों का मार्ग प्रशस्त करेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***